बाइबल पर आधारित निर्णय लेना

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय आठ

अस्तित्व -संबंधी दृष्टिकोण : अच्छा होना

THIRD MILLENNIUM MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-सूची

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:27) 4

II. सृष्टि (4:18) 4

A. परमेश्वर (5:08) 4

B. मनुष्यजाति (13:44) 6

1. स्वरूप (15:00) 6

2. आशीष (18:52) 7

3. सांस्कृतिक आदेश (20:25) 7

III. पतन (22:40) 8

A. स्वभाव (23:54) 8

B. इच्छा (26:57) 9

C. ज्ञान (34:35) 10

1. प्रकाशन के प्रति पहुँच (35:32) 10

2. प्रकाशन की समझ (38:44) 11

3. प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता (41:54) 11

IV. छुटकारा (49:25) 13

A. स्वभाव (50:40) 13

B. इच्छा (54:55) 13

C. ज्ञान (57:58) 14

1. प्रकाशन के प्रति हमारी पहुँच (58:11) 14

2. प्रकाशन की समझ (1:00:05) 15

3. प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता (1:02:26) 15

V. उपसंहार (1:09:50) 16

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 17

प्रयोग के प्रश्न 21

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:27)

हमारे शब्द, हमारे विचार और कार्य हमारे मूलभूत चरित्र से संबंधित होते हैं। हमारे कार्य सदैव हमारे अस्तित्व को दर्शाते हैं।

अस्तित्व-संबंधी दृष्टिकोण : उन लोगों पर केन्द्रित होता है जो नैतिक निर्णय लेते हैं।

- चरित्र
- स्वभाव
- हम कैसे लोग हैं और हमें कैसे बनना चाहिए

II. सृष्टि (4:18)

A. परमेश्वर (5:08)

सारी सच्ची नैतिक अच्छाई स्वयं परमेश्वर में पाई जाती है।

1. अस्तित्व (5:35)

परमेश्वर की विशेषताएं उसके व्यक्तित्व से अभिन्न हैं; वे परिभाषित करती हैं कि वह कौन है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पवित्रशास्त्र सामान्यतः उसकी विशेषताओं के अनुसार उसका वर्णन करते हैं और उसका नाम रखते हैं :

- करुणा का पिता Father of compassion
- सब प्रकार की शांति का परमेश्वर
- सर्वशक्तिमान परमेश्वर
- न्यायी परमेश्वर
- शांतिदाता परमेश्वर
- परम पवित्र
- प्रतापी राजा

परमेश्वर की सभी विशेषताएं "अपरिवर्तनीय" हैं —वे कभी बदल नहीं सकती।

2. अच्छाई (9:04)

अच्छाई : नैतिक शुद्धता और सिद्धता

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर स्वयं नैतिकता का परम स्तर है। अच्छाई का कोई बाहरी स्तर नहीं है जिसके द्वारा उसका या हमारा न्याय किया जा सके।

परमेश्वर की प्रत्येक विशेषता :

- उसके सम्पूर्ण अस्तित्व का दृष्टिकोण है
- दूसरी विशेषताओं पर निर्भर होती है
- दूसरी विशेषताओं द्वारा महत्वपूर्ण बनाई जाती हैं

B. मनुष्यजाति (13:44)

मनुष्यजाति की रचना परमेश्वर की अच्छाई को प्रकट करने के लिए की गई थी।

1. स्वरूप (15:00)

सारी सृष्टि में महान राजा परमेश्वर ने मनुष्यजाति को अपनी जीवित तस्वीरों अर्थात् स्वरूपों के रूप में स्थापित किया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर ने हमें ऐसी विशेषताओं के साथ रचा जो उसकी सिद्धताओं को दर्शाती थीं।

2. आशीष (18:52)

परमेश्वर जिसे भी आशीषित करता है और अनुमोदित करता है वह अच्छा है, और जिसे परमेश्वर श्रापित करता है और जिसकी निंदा करता है वह बुरा होता है।

परमेश्वर ने आदम और हव्वा को आशीष दी क्योंकि उनके अन्दर अच्छाई की एक जन्मजात विशेषता थी।

3. सांस्कृतिक आदेश (20:25)

परमेश्वर ने मनुष्यजाति को नियुक्त किया कि वे के रूप में :

- पृथ्वी पर उसके वासल राजा बनें
- उसकी महिमा के लिए इसे भरें और इस पर अधिकार एवं शासन करें

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मनुष्यजाति :

- परमेश्वर के निवास के लिए एक पवित्र, धर्मी राज्य का निर्माण करने में सक्षम थी
- बिना नाश हुए परमेश्वर की प्रकट उपस्थिति में सेवा करने के योग्य थी
- हमारे अस्तित्व में नैतिक रूप से शुद्ध थी
- नैतिक रूप से अच्छे कार्यों को चुनने और करने में सक्षम थी

III. पतन (22:40)

पाप ने मनुष्यजाति के अस्तित्व को क्षति पहुंचाई और हमारी अच्छाई को नष्ट कर दिया।

A. स्वभाव (23:54)

स्वभाव : हमारा मूलभूत चरित्र, अर्थात् हमारे अस्तित्व के मुख्य पहलू

मनुष्यजाति का आधारभूत चरित्र नैतिक रूप से बुरा हो गया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. इच्छा (26:57)

इच्छा : निर्णय लेने, चुनने, लालसा रखने, आशा रखने और इरादा करने की व्यक्तिगत क्षमता।

जब परमेश्वर ने मनुष्यजाति को श्राप दिया तो हमारी इच्छाएं भ्रष्ट हो गयीं, और हमारे लिए असंभव हो गया कि हम परमेश्वर को प्रसन्न करें।

पाप उस सबको दूषित या कलंकित कर देता है जो हम सोचते, करते या कहते हैं।

एक ऐसा भाव है जिनमे पुनः जन्म न पाए हुए लोग :

- परमेश्वर की आज्ञाओं को मानते हैं
- अच्छे कार्य भी करते हैं

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

हमारे कार्यों को वास्तव में अच्छा होने के लिए पांच परखों से गुजरना जरूरी है :

- वे ऐसे कार्य होने चाहिए जिनकी आज्ञायें परमेश्वर देता है।
- वे अपने और दूसरों के लिए अच्छे इस्तेमाल के होने चाहिए।
- ये एक ऐसे ह्रदय से आने चाहिए जो विश्वास से शुद्ध किया गया हो।
- वे सही रूप में किया जाने चाहिए।
- वे एक सही लक्ष्य, अर्थात् परमेश्वर की महिमा, के लिए किये जाने चाहिए।

C. ज्ञान (34:35)

पतन ने मनुष्यजाति को परमेश्वर की आज्ञाओं के उचित ज्ञान को प्राप्त करने से रोक दिया है।

1. प्रकाशन के प्रति पहुँच (35:32)

पतन ने पवित्र आत्मा के प्रकाशन देने और आंतरिक अगुवाई के कार्य को सीमित कर दिया है।

- प्रकाशन : ज्ञान या समझ का एक दैवीय वरदान जो कि मुख्य रूप से बौद्धिक है।
- आन्तरिक अगुवाई : ज्ञान या समझ का एक दैवीय वरदान है जो मुख्य रूप से भावनात्मक है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर इस प्रकार स्वयं को प्रकट करता है कि वह उससे प्रेम करने वालों को आशीष दे और उससे घृणा करने वालों को श्राप दे।

2. प्रकाशन की समझ (38:44)

नैतिक समझ :

- मात्र बौद्धिक समझ से अधिक बातों पर निर्भर होती है
- इसमें सम्पूर्ण व्यक्तित्व शामिल होता है

परमेश्वर से सच्चे ज्ञान को स्वीकार करने की अपेक्षा हम अपने आपको उन झूठी बातों में लगा देते हैं जो हमारा पापी हृदय सोचता है।

3. प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता (41:54)

एक ऐसा भाव है जिसमें ज्ञान और आज्ञाकारिता मूल रूप से एक ही चीज हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

a. आज्ञाकारिता ज्ञान की ओर अगुवाई करती है।

आपसी संबंध :

- परमेश्वर का ज्ञान परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता को उत्पन्न करता है
- आज्ञाकारिता के लिए ज्ञान पहली आवश्यकता है
- और परमेश्वर के वचन का आज्ञापूर्ण पालन उसके ज्ञान की ओर हमारी अगुवाई करता है

जैसे आज्ञाकारिता ज्ञान की ओर अगुवाई करती है, वैसे ही पाप अज्ञानता की ओर।

b. आज्ञाकारिता ज्ञान है

समानार्थी प्रयोग:

- एक भाव दूसरे को स्पष्ट करता है
- आज्ञाकारिता और ज्ञान को एक-दूसरे के लिए परिभाषा के रूप में दिया जाता है
- आज्ञाकारिता या ज्ञान एक को दूसरे के उदाहरण के रूप में इस्तेमाल किया जाता है

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. छुटकारा (49:25)

छुटकारा :

- पतन के ठीक बाद आरम्भ हुआ जब परमेश्वर ने आदम और हव्वा पर दया दिखाई
- पतन के सारे प्रभावों को एकदम से दूर नहीं कर दिया

A. स्वभाव (50:40)

जब हम मसीह में छुटकारा पाते हैं तो :

- पवित्र आत्मा हमें अच्छा स्वभाव देता है जो परमेश्वर से प्रेम करता है और पाप से घृणा करता है
- हम सच्ची अच्छाई के योग्य बन जाते हैं

जब परमेश्वर हमें छुड़ाता है, तो वह हमारी पुनः रचना करता है, हमें नए हृदय और आत्माएं देता है जो पापी नहीं बल्कि धर्मी हों।

B. इच्छा (54:55)

इच्छा : निर्णय लेने, चुनने, अभिलाषा करने, आशा करने और इरादा करने की हमारी व्यक्तिगत क्षमता

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

जब हम मसीह में विश्वास में आते हैं तो :

- पाप का हमारी इच्छा पर अधिकार टूट जाता है
- पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करने लगता है और परमेश्वर से प्रेम करने और उसकी आज्ञा मानने के लिए हमारी इच्छाओं को सामर्थी बनाता है और प्रेरित करता है

पाप अभी भी हमारे अन्दर वास करता है और हमारे अन्दर पाप के प्रभाव और पवित्र आत्मा के प्रभाव के बीच संघर्ष चलता रहता है।

C. ज्ञान (57:58)

1. प्रकाशन के प्रति हमारी पहुँच (58:11)

प्रकाशन और आन्तरिक अगुवाई पुनर्स्थापित हो जाती हैं।

पवित्र आत्मा :

- सुसमाचार के सत्य के प्रति हमें बोध कराता है
- हमारे विवेक को परमेश्वर के चरित्र के बारे में संवेदनात्मक बनाता है
- हमें भक्तिपूर्ण अंतर्बोध देता है

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. प्रकाशन की समझ (1:00:05)

पवित्र आत्मा :

- हमारे ह्रदय को बदल देता है जिससे हम परमेश्वर से प्रेम करने लगते हैं
- वह हमारे मनों को नया कर देता है जिससे हम परमेश्वर द्वारा प्रकट सत्यों को समझ पाने के योग्य हो जाते हैं

पवित्र आत्मा हमारे हृदयों और मनों की रखवाली करता है ::

- हमें धोखा देने की पाप की शक्ति को नाश करता है
- प्रकाशन को समझने में हमें सामर्थ देता है

3. प्रकाशन के प्रति आज्ञाकारिता (1:02:26)

a. छुटकारा आज्ञाकारिता की ओर अगुवाई करता है

पवित्र आत्मा की अगुवाई और हमारे अन्दर वास करने वाली सामर्थ से विश्वासी संसार के बाकी लोगों से अलग व्यवहार करते हैं।

हमारे अन्दर निवास करने वाली और छुटकारा देने वाली उपस्थिति के जरिये पवित्र आत्मा हमारे जीवन में धार्मिकता के फल को उत्पन्न करता है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. छुटकारा आज्ञाकारिता है

मसीह की ओर आना आज्ञाकारिता का ही एक कार्य है।

छुटकारा पाए हुए लोग परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी होते हैं।

छुटकारा परमेश्वर के प्रति हमारी आज्ञाकारिता को उत्पन्न करता है, और परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारिता परमेश्वर और उसके कार्य करने के तरीकों का ज्ञान उत्पन्न करती है।

V. उपसंहार (1:09:50)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. स्पष्ट कीजिए कि किस प्रकार सारी सच्ची और नैतिक अच्छाई स्वयं परमेश्वर में ही पाई जाती है।

2. परमेश्वर के स्वरूप, मानवजाति पर परमेश्वर की आशिषों और सांस्कृतिक आदेश से संबंधित मानवजाति की अच्छाई और भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. कैसे और किन रूपों में मानवीय स्वभाव पतन के द्वारा प्रभावित रहा है?

4. किन रूपों में मानवीय इच्छा पतन के द्वारा प्रभावित रही है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. पतन ने किस प्रकार छुटकारा न पाए हुए मनुष्यों को परमेश्वर की आज्ञाओं के एक उचित ज्ञान को प्राप्त करने से रोका है?

6. मसीह में छुटकारा पाने के बाद पतित मनुष्य के स्वभाव के साथ क्या होता है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. हमारी इच्छा की उस पुनर्स्थापना को स्पष्ट कीजिए जो उस समय होती है जब हम छुटकारे का अनुभव प्राप्त करना आरंभ करते हैं।

8. हमारे ज्ञान पर छुटकारे के प्रभाव को स्पष्ट कीजिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

प्रयोग के प्रश्न

1. मसीही किस प्रकार इस बात से राहत प्राप्त कर सकते हैं कि परमेश्वर की विशेषताएं या उसके चरित्र अपरिवर्तनीय हैं? इस ज्ञान से कैसी राहत मिलती है कि परमेश्वर की विशेषताएं या उसके चरित्र कभी विरोधाभासी नहीं होते?

2. किन रूपों में राजकीय संतानों के रूप में परमेश्वर के स्वरूप होने का भाव मनुष्यजाति को गौरव प्रदान करता है?

3. किस प्रकार श्राप के अधीन रहने वाला एक नैतिक रूप से बुरा व्यक्ति नैतिक रूप से अच्छे दिखने वाले निर्णय ले सकता है (जैसे कि वह सच्चा, सहायक, दयालु इत्यादि हो)?

4. पतन मानवीय स्वभाव को भ्रष्ट करता है, इच्छा को गुलाम बनाता है और परमेश्वर के प्रति हमारे ज्ञान को हानि पहुंचाता है। संसार में सुसमाचार प्रचार करने के हमारे प्रयासों पर इसका क्या प्रभाव पड़ता है? प्रचार करने की हमारी नीतियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ना चाहिए?

5. अपने जीवन से स्पष्ट करें कि कैसे परमेश्वर के ज्ञान ने आज्ञाकारिता की ओर अगुवाई की है?

6. आपने किन रूपों में परमेश्वर की विधियों की अपनी आज्ञाकारिता का परिणाम परमेश्वर के गहरे ज्ञान के रूप देखा है?

7. मसीह में हम पुनः सच्ची अच्छाई के योग्य बन गए हैं, परन्तु हम फिर भी पाप के साथ संघर्ष करते हैं। पाप का विरोध करने में आपको कौनसी नीतियाँ सहायक लगी हैं? पाप का विरोध करने में आपने कौनसी नीतियों को असहायक पाया है?

8. किन रूपों में आपने अपने कलीसियाई समुदाय को परमेश्वर से प्रेम करते और उसकी आज्ञा मानते पाया है? किन रूपों में आप परमेश्वर से प्रेम कर रहे हैं और उसकी आज्ञा मान रहे हैं? प्रेम और आज्ञाकारिता में संबंध को स्पष्ट कीजिए।

9. यीशु का पुनरागमन और उसके छुटकारे की पूर्णता मसीहियों को कैसे आशा प्रदान करती है?

10. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org